

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में सामाजिक सरोकार

प्रो. डॉ. शेख शहेनाज

हिंदी विभाग प्रमुख

हु. जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,

हिमायतनगर, नांदेड .-431802.

हिंदी कथा-साहित्य के क्षेत्र में कृष्णा सोबती का नाम अग्रणी है। ये स्वातंत्र्योत्तर लेखिकाओं में सबसे अधिक चर्चित रही हैं। इनके बहु चर्चित होने का प्रमुख कारण इनके साहित्य में पंजाबी सस्कारों से युक्त नारी-मन का खुलेपन के साथ चित्रण माना जाता है। कृष्णा सोबती ने पंजाब प्रांत यहाँ की नारी की पराधीन जिंदगी को करीब से देखा था, देखा ही नहीं अनुभव भी किया था। जिसका प्रत्यक्ष रूप हमें इनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। आधुनिक हिंदी रचनाकारों में कृष्णा सोबती एक ऐसी ही महत्वपूर्ण रचनाकार है जिन्होंने सामाजिक रूप से सजग एवं सशक्त उपन्यासों एवं कहानियों की रचना कर भारतीय कथा-साहित्य को एक विस्तृत फलक प्रदान किया है। लगभग छह दशकों तक फैले अपने रचनाकाल में सोबती ने कुल दस उपन्यास, एक कहानी संग्रह, संस्मरण, रेखाचित्र संग्रह तथा रिपोताज सम्मिलित हैं। कम लिखने के बावजूद भी उनका लेखन विशिष्ट है।

साहित्य के निर्माण और उसके बोध की प्रक्रिया सामाजिक संदर्भों से कभी असंपुक्त नहीं रही है। आधुनिक युग के साहित्य पर सामाजिक-राजनीतिक परिवेश का जितना गहन और व्यापक प्रभाव पड़ा है, वह इससे दृष्टिगत नहीं होता। आज का साहित्यिक सामाजिक संगठनों, समाज की आर्थिक संरचना एवं राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश से गहरे तौर पर प्रभावित हुआ है।

कृष्णा सोबती का रचनाकर्म यथार्थ बोध से निःसृत है, जिसमें युगीन सामाजिक-राजनीतिक हलचलों को महसूस किया जा सकता है। सामाजिक यथार्थ को जीवन से जोड़ने की कला सोबती के लेखन की विश्वसनीयता को बढ़ाती है। अपनी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ के निर्वाह में वे अपने विचारों को कमजोर नहीं पड़ने देती।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही व्यक्ति का उत्थान-पतन, उन्नति-अवनति, पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक कार्य संपादित होते हैं। इतिहास साक्षी है कि जब-जब भी मानवीय हित सामाजिक हितों से टकराये हैं समाज संरचना की परम्परागत धारणाएँ या आधारशिलाएँ खड़ी हुई हैं तो मानव ने अपनी कल्पना का सुंदर महल बनाकर खड़ा कर दिया। कृष्णा सोबती के उपन्यासों का संपूर्ण चिंतन समाज सापेक्ष है इसमें भी व्यक्ति मूल्य प्रमुख है। जब समाज में सर्वत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष है चाहे वह व्यक्तिगत क्षेत्र में हो, वर्ग विशेष में हो अथवा सामाजिक क्षेत्र में तब यह निश्चित होता है कि महिला उपन्यासकारों का समाज संरचना के संबंध में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। समाज में नारी के अपने स्वप्न को पूरा करने की कल्पना द्वारा उपन्यासों में विभिन्न दृष्टिकोणों में अभिव्यक्त किया है।

कृष्णा सोबती ने वर्जनाविहीन समाज के नवीन वातावरण में दाम्पत्य के बदलते रूपों को देखा-परखा है। परम्परागत दाम्पत्य जीवन पर लेखिका ने नवीन प्रश्नों को उभारा है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास की नायिका रत्ती एक पुरुष की छाया में जीवन व्यतीत करने में विश्वास नहीं रखती। भिन्न-भिन्न स्थानों और परिवेश में विभिन्न पुरुषों से प्रेम-संबंध स्थापित करती है, अतृप्ति का अग्नि में समस्त जीवन जलती रहती है अपने इसी अतृप्त जीवन का परिचय देती हुई रत्ती के इन शब्दों में और अधिक

नष्ट हो जाती है। रत्ती अच्छी लड़की नहीं, रत्ती कोई औरत नहीं, वह सिर्फ गीली लकड़ी है, जब भी जलेगी, धुँआ, देगी सिर्फ और सिर्फ धुँआ।¹ रत्ती के लिए यह लड़ाई दोहरे छोर पर है, एक तो उसे उस घटना से लड़ना है दूसरा उसे लोगों द्वारा खुद को एक सीमा में निर्धारित कर लिए जाने से। ऐसी स्थिति में व्यक्ति भीड़ में रहते हुए भी खुद को अकेला महसूस करने के लिए मजबूर हो जाता है। रत्ती को भी ये अधुरापन अपना लगने लगा और वह इसमें आनंदित भी रहने लगी। उपन्यास के प्रारंभ में ही केशी और रीमा जो की पति-पत्नी हैं और रत्ती के दोस्त भी रत्ती के संदर्भ में ऐसी ही भूमिका का निर्वहन करते देखे जा सकते हैं। केशी उसे समझता है। वह जानता है कि यह लड़ाई पुरुष के विरोध में नहीं बल्कि उसकी खुद से है। केशी उसे मानसिक रूप से सहारा देता है। वह नहीं चाहता की रत्ती अतीत में खोकर अपना वर्तमान और भविष्य खराब करें। वह उसे समझाता है कि, “हमेशा अपने से अपने अंदर लड़ते रहने का कोई फायदा नहीं। लड़ाई को अपने से बाहर रखकर लड़ना हमेशा अच्छा रहता है।”²

कृष्णा सोबती द्वारा लिखित ‘डार से बिछुड़ी’ उपन्यास में पाशो अपनी नानी, मामा-मामियों की भर्त्सना और आक्रोश को झेलने के लिए विवश है क्योंकि वह उस माँ की बेटी है जो खोजो वाले हवेली के शेख के साथ भाग गयी थी। माँ की तरह ही पुत्री पर दुष्चरित्र होने का आरोप लगाकर उसे बड़े-कड़े नियमों के अधीन जीवन व्यतीत करने की हिदायतें दी जाती हैं। उसके उठने-बैठने के ढंग पर भी परिवार वालों को आपत्ती है। उन सब की डाँट-फटकार और मार को सहन करना उसकी नियति है। वह मामा-मामी और नानी सबकी नजरों में कुलच्छनी है क्योंकि उसकी माँ ने उनके घर की मर्यादा को खाक में मिलाया था। उसकी मामी उसे हमेशा कुछ न कुछ सुनाती रहती, “अरी नरकों में वास हो तेरा और तुझे जन्मनेवाली का उस शोहदे से आँख लड़ाने चली। जैसे कुलच्छनी माँ थी...”³ पाशो यह सह नहीं पाई और माँ के पास चली गई। कृष्णा सोबती ने अपनी इस कथाकृति में पात्रों के माध्यम से स्त्री-जीवन के समक्ष जन्म से ही मौजूद खतरों और उसकी विडंबनाओं को रेखांकित किया है, पाशो इस उपन्यास में धरती और संस्कृति दोनों की प्रतिरूप है क्योंकि पाशो की माँ जो विधवा थी उन्होंने अपनी जिंदगी में एक दूसरे पुरुष शेख के साथ विवाह किया, जिस कारण पाशो को बचपन से ही इसकी कीमत चुकानी पड़ी, उसे हमेशा शक की नजरों से देखा जाता था।

‘मित्रो मरजानी’ कृष्णा सोबती द्वारा रचित उपन्यास में कामदग्ध नारी की वेदना का चित्रण किया गया है। मित्रों में कामोत्तेजना सामान्य नारी की तरह नहीं है इसलिए पति के अतिरिक्त भी अवैध संबंध जोड़कर वह अपनी काम तृप्ति करती है। वह स्वयं ही नहीं उसकी माँ बालों का चरित्र भी इसी श्रेणी का है संभवतः पुत्री ने अनुवांशिकता में ही यह कामेच्छा प्राप्त की है। मित्रों का विवाह व्यापारी परिवार में होता है जो संयुक्त परिवार है। उसका नाम सुमित्रवती है, जिसे मित्रों का बुलाते हैं। मध्यमवर्गीय संयुक्त पारिवारिक परिवेश में मित्रो बड़ी बेबाक, निडर और सक्षम स्त्री को चरितार्थ करती है जो अपनी देह की मांग को अपराध बोध से जोड़कर नहीं देखती वह यह मानने को कतई तैयार नहीं है कि जो देह प्रेम करने का माध्यम है उसे सिर्फ घर, परिवार और कर्तव्यों से ही जोड़कर देखा जाय। जब मित्रो कहती है, “मित्रो रानी! थंता फिकर तेरे बैरियों को। जिस धड़ने वाले ने तुझे घड दुनियाँ का सुख लुटने को भेजा है, वहीं जहाँ का वली तेरी फिकर भी करेगा।”⁴ हमारे सामने एक बेबाक और ईमानदार औरत आ खड़ी होती है जो अपनी देह को देह भी मानती है पर इसे अंतिम नहीं मानती।

मित्रो कोई विदुषी नहीं, जमीन और मिट्टी से जुड़ी एक साधारण औरत है, जो अपनी ईमानदारी और सहजता की वजह से उस पूरे माहौल में अलग ही दिखाई पड़ती है। वह अपने परिवेश को एक खतरे की तरह देखी और महसूस करती है। वह अपने आस-पास व्याप्त भोग युक्त आकर्षक जीवन के प्रति भी उतनी ही आकर्षित है जितना वह अपने पति की कोमल सानिध्य के लिए

तरसती है। अपनी मांसलता, और देह को पूरी तरह सहजता से जीने वाली नारी चरित्र इसके पहले हिंदी साहित्य में नहीं दिखाई देती।

साठ के दशक के उपन्यासों में चित्रित नारी सन् 2000 तक आते-आते फिल्म 'अस्तित्व' की आदिति पंडित में नज़र आती है। वह जब अपने पति श्रीकांत पंडित से पूछती है- "बताओ श्री क्या करू मैं अपनी उन इच्छाओं जो मेरी देह में उठती है? तुम्हारी देह में उठने वाली इच्छाएँ, इच्छाएँ और यही इच्छाएँ मेरे लिए पाप?"⁵

कैसी विडंबना है, स्त्री शुचिता से जुड़े जो सवाल। भारतीय समाज में 1966 में मित्रो मरजानी द्वारा पूछे गए, 2000 की फिल्म आस्तित्व तक भारतीय स्त्री उन्ही सवालों से जुझती दिखती है। और आज की फिल्मों की बात करें तो भी मूलभूत मुद्दे वही हैं। उत्तर वैदिक युग की मंत्रोच्चार करती हुई विदुषी स्त्री कैसे वर्तमान की इस दशा में पहुँची यह पूरे समाज के पतन की महागाथा है। सवाल यह उठता है कि क्या हमारा समाज मानसिक रूप से इतना कुंठित है, कि स्त्री-शुचिता अब भी सबसे बड़ा प्रश्न है?

उसी तरह 'दिलो-दानिश'का कथानक एक सामंती हवेली और रईस समाज-व्यवस्था के कृपानारायण है। प्रस्तुत उपन्यास की कथा में कुदम्ब प्यारी जो कि कृपानारायण की वैध पत्नी है और महक बानो अवैध पत्नी, परंतु दोनों किसी न किसी रूप से पुरुष की सामाजिक सत्ता का शिकार बनी हुई है। इस उपन्यास में जिन प्रश्नों को उजागर किया गया है, वे आज भी हमारे समाज में सिर उठाये खड़े हैं। आज भी युगीन नारी के जीवन की समस्या बने हुए है। कृपानारायण पत्नी और रखैल में हमेशा अंतर पाते हैं। दोनो गुण व चरित्र में काफी अलग है, अतः अक्सर वे दोनों की तुलना करके स्वयं पर खुश होते हैं। लेखिका के शब्दों में, "हर सड़क पटरी या पगडंडी आखिर अपनी मंजिल पा घर तक पहुँचाती है। पर वकील साहब कहाँ? कभी-कुदुंब के किनारे और कभी महक के। क्या समझाइए जिस्म की राहत चाहिए होती है पर दिलो-दिमाग भी कुछ मांगते।"⁶

मानव समाज और हिंदी उपन्यास में स्त्री-पुरुष संबंधों का अध्ययन करने के पश्चात मालूम होता है की दम्पति में दोनों अथवा एक के विवाह के पूर्व अथवा विवाहोत्तर प्रेम संबंध किसी क्षण भी दोनों के जीवन में पहले शंका, फिर विघटनकारी सिध्द हुए है। "महक अब महक नहीं जो वकील साहब के प्रेम और विश्वास के सहारे दुनिया को भुलाए बैठी थी, जो अपने अस्तित्व की सार्थकता वकील साहब की खुशियों में तलाशती थी। बल्कि अब तो महक अपने हकों की मांग करती हुई वकील साहब से तर्क वितर्क करने से नहीं चूकती।"⁷ भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जहाँ विभिन्न धर्म को मानने वाले लोग परस्पर मिलजुल कर रहते हैं। इसकी नैतिकता की जड़े संस्कृति में गहरे तक धंसी हुई है। अतः समाज में दाम्पत्य का जो स्वरूप उखड़ा-उखड़ा दिखाई देता है उसको नष्ट करने में नारी की अंतरात्मा तैयार नहीं है। कृष्णा सोबती के नारी पात्रों को उपन्यासों में अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध एवं अपनी विरोधी परिस्थितियों से लड़ती हुई एवं समाज के समक्ष महत्वपूर्ण सवाल उठाती नज़र आती है। जैसे- क्या नारी का जन्म समाज में इतना विध्वंसकारी है कि उसे मौका देकर मार दिया जाए।

आज की नारी परम्परागत सामाजिक मूल्यों तथा संस्कारों को नकारते हुए अपनी अधिकारों की माँग करती दिखाई देती हैं। युगीन उपन्यासकारों ने भारतीय नारी जीवन में आधुनिकीकरण के बदलते परिवेश से होने वाले परिवर्तनों को दिखाने का प्रयास किया है साथ ही साथ स्त्री-पुरुष के परस्पर बदलते जीवन संबंधों एवं विघटित समाज को दर्शाया है। लेखिका ने समस्त प्राचीन सामाजिक संस्थाओं की सड़ी गली रूढियों से टक्कर लेकर नारी को इनके विरोध करने तथा क्रांति कर अपने जीवन के मुक्ति हेतु सजग रहने की प्रेरणा प्रदान की है।

आज की नारी पर पाश्चात्य देशों की विभिन्न विचारधाराओं सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव भी व्यापक रूप से पडा है। वह आज अपने स्वतंत्र जीवन को जीने के लिए लालायित है। स्त्री-पुरुष संबंधों में समानाधिकार की मांग से परिवार एवं

सामाजिक मान मूल्यों में विघटन की प्रक्रिया के संबंध में क्रांति वर्मा ने लिखा है, “वर्तमान युग में बौद्धिकता के कारण नारी का दृष्टिकोण यथार्थवादी बनता चला गया है।”⁸ आज स्वच्छंद अभिव्यक्ति में बाधक सामाजिक मर्यादाओं-मान्यताओं की संगतता-असंगतता पर विचार किया है। परिवार तथा समाज के परिप्रेक्ष्य में उसकी व्यक्तिगत मान्यताओं को स्वीकृति प्राप्त होने पर सामाजिक मूल्यों में बदलाव आया है।

स्त्री-पुरुष संबंध के दायरे बदल गए हैं। कृष्णा सोबती के उपन्यासों में पतिव्रता नारी के साथ वेश्या जैसे नारी पात्रों का चित्रण किया गया है। ‘डार से बिछुड़ी’ उपन्यास में पाशो दीवान जी की पत्नी मालन बनकर घर आई। तो ‘जिंदगीनामा’ में बड़ी शाहनी अपने गौरव गरिमा के अनुकूल उदार, सह्य, सहिष्णु, धार्मिक, परिश्रमी व्यवहार कुशल और आदर्श पत्नी है।

आज सामाजिक बंधन इतने बदल गए हैं कि भारतीय संस्कृति में मर्यादा, शील व लज्जा जैसे शब्द नारी के साथ इस कदर जोड़ दिए गए कि उसके बाहर नारी जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन नारी अब इन बंधनों से मुक्त हो रही है। जिस स्त्री को पुरुष वर्षों से वस्तु मानकर, भोगता रहा है। वह अब वस्तु से प्रमाण जीव बनकर खड़ी हो रही है। आज की नारी ने स्वतंत्र अस्तित्व को पाने के लिए समाज में संघर्ष किया है जो सामाजिक मूल्यों का विरोध कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास करती है। आज सामाजिक संबंधों में इतना बदलाव आया है कि सभी व्यक्ति अकेलापन, ऊब, कुंठा और बिखरते सामाजिक संबंधों की मार संपूर्ण समाज पर दिखाई दे रही है। इस प्रकार कृष्णा सोबती द्वारा लिखित उपन्यासों में नारी जीवन एवं उससे जुड़ी विभिन्न विषयों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- 1) कृष्णा सोबती- सूरजमुखी अंधेरे के -पृ.20
- 2) कृष्णा सोबती- वहीं - पृ.38
- 3) कृष्णा सोबती- डार से बिछुड़ी - वहीं - पृ.19
- 4) कृष्णा सोबती- मित्रों मरजानी - वहीं - पृ.18
- 5) ‘अस्तित्व’ फिल्म - महेश मांजरेकर
- 6) कृष्णा सोबती- दिलो दानिश- पृ.56, 57
- 7) सिंह रूपा - स्त्री अस्मिता और कृष्णा सोबती - पूर्वदय प्रकाशन नई दिल्ली, 2008
- 8) कृष्णा सोबती- दिलो दानिश - पृ.57